फूलों की घाटी : एक शोध समीक्षा

चन्द्रप्रकाश काला 'हीरामणी'
गोविन्द वल्लभ पन्त हिमालय पर्यावरण एवं विकास संस्थान, कोसी-कटारमल, अल्मोड़ा २६३ ६४३

विश्वविख्यात फूलों की घाटी जो कि उत्तरांचल राज्य के चमोली जिले में स्थित है, विगत दो दशकों से संरक्षण की नीतियों के तहत विवादों से घिरी हुई है। विवाद का प्रमुख कारण १९८२ से इस घाटी में मवेशियों के चरान-चुगान पर प्रतिबन्ध लगाना माना जा रहा है। जिसके फलस्वरूप यहॉ पर कुछ वनस्पति प्रजातियों के विस्तार को लेकर प्रकृति प्रेमी सहज रूप में ही बहुत ही चिन्तित है। कुछ वनस्पतिविदों का मत है कि १९८२ से इस घाटी के ८७.०५ वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल को राष्ट्रीय पार्क घोषित करने के उपरान्त सरा (पोलीगोनम पॉलिस्टीकियम्) नामक पौधा इस राष्ट्रीय पार्क में लगातार फैल रहा है। फलस्वरूप इस पार्क के विभिन्न वनस्पति प्रजातियॉ संकटग्रस्त हो चुकी है और इस पार्क की नैसर्गिक सुन्दरता नष्ट हो रही है।

उपरोक्त सभी तथ्यों एवं धारणाओं के वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए मैंने **'फूलों की घाटी राष्ट्रीय पार्क'** पर अपना शोध कार्य १९९३ में प्रारम्भ किया। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में इस शोध कार्य की विस्तृत जानकारी **'इकोलाजी एण्ड कनजरवेंसन ऑफ एलपाइन मिडोज इन द वैली ऑफ फ्लावर्स'** नामक शोध ग्रन्थ में समाहित है। फूलों की घाटी में मवेशियों के चरान-चुगान से सम्बन्धित तुलनात्मक अध्ययन के लिए मैंने इसी वर्ष (२१ जून से १ जुलाई २००१) इस घाटी का भ्रमण किया। जिसके दौरान मुझे १९९३ से २००१ तक घाटी में निम्न परिवर्तन दिखाई दिए।

घाटी की वृक्ष रेखा (३३००+२०० मी. ऊँचाई) के समीपवर्ती कुछ भू-भागों पर जहॉ १९९३ में पॉलीगोनम प्रचुर मात्रा में फैला हुआ था आज भोजपत्र (विटुला यूटीलिस्) का जंगल उग रहा है। लेकिन यह परिवर्तन वृक्ष रेखा के समीपवर्ती व अंदरूनी उन भू-भागों तक ही सीमित है जहॉ पर कि पूर्व में मानव द्वारा वृक्ष रेखा पर अत्यधिक दबाव रहा होगा। चूकि फूलों की घाटी मुख्यत: एक बुग्याल है जिसमें शाकीय वनस्पतियों का ही वर्चस्व रहता है और पालसियों (भेड़ बकरी चुगाने वाले) के ईधन व अन्य जरूरतों के लिए लकड़ी वृक्ष रेखा व इसके समीपवर्ती भू-भागों पर ही प्राप्त होती है। अतएव: पूर्व में इस वृक्ष रेखा पर अत्यधिक दबाव रहा होगा जिसके फलस्वरूप भोजपत्र व रोडोडेन्ड्रान के जंगल, जो कि वृक्ष रेखा पर बहुतायत में पाये जाते हैं,या तो खत्म हो गये या कम हो गये। लेकिन १९८२ में इस दबाव के हटने से यह वृक्ष रेखा अपने पूर्व स्वरूप में लौटने का प्रयास कर रही है। जिसका ज्वलंत उदाहरण भोजपत्रों द्वारा कुछ स्थानों पर पॉलीगोनम् को विस्थापित करना है।

फूलों की घाटी राष्ट्रीय पार्क में १०५ किस्म की औषधीय प्रजातियॉ पायी जाती हैं। जिनमें ३० औषधीय प्रजातियॉ पूरे हिमालय क्षेत्र के लिए संकटग्रस्त श्रेणी में रखी गयी हैं। हथजड़ी, या सालमपंजा (डेक्टाइलोराइजा हटॉजीरिया) एक महत्वपूर्ण औषधी है जिसका प्रयोग टॉनिक के रूप में किया जाता है। और यह संकटग्रस्त श्रेणी में रखी गयी है। इसके बनों से एकत्रीकरण पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा हुआ है। लेकिन यह विलुप्तप्राय: महत्वपूर्ण औषधीय पौधा फूलों की घाटी से पूर्ण प्रतिबन्ध के बावजूद भी निकाला जा रहा है। हथजड़ी का घनत्व फूलों की घाटी में १९९५ में ५-६ पौधे प्रति वर्ग मी० था लेकिन २००१ में यह घटकर २-३ पौधे प्रति वर्ग मी० तक ही सीमित रह गया है। १९९५ में हथजड़ी इस सम्पूर्ण क्षेत्र में सबसे अधिक फूलों की घाटी में पाया जाता था लेकिन आज इसकी पूर्ण रूपेण देखभाल न होने से यह औषधीय पौधा फूॅलों की घाटी में भी विलुप्त होने के कगार पर पहुॅच गया है।

मेरे पिछले ९(नौ) सालों के लगातार अध्ययन से यह पता चलता है कि फूलों की घाटी राष्ट्रीय पार्क में जून से सितम्बर तक ५२० किस्म की पादप प्रजातियॉ उगती है। इनमें से ४९८ फूॅलों की प्रजातियॉ (एन्जियोस्पर्म) है, यह सारे फूल एक साथ नहीं खिलते। बल्कि प्रत्येक पुष्प का अपना-अपना समय का जीवन चक्र होता है। मार्स मैरी गोल्ड (कैल्था

पैलूस्ट्रीस) व प्रिमुला बर्फ पिघलने के साथ ही खिलने शुरू हो जाते है। और १०-१२ दिन के अन्दर ही अपना जीवन चक्र पूरा कर देते हैं। इसके बाद विभिन्न पुष्पीय पादप जैसे लिली, पोटेन्टिला, फ्रिटीलेरियॅा, जिरेनियम, पोलीमोनियम, कैम्पैनुला, कोराइडेलिस, ससुरिया, एनीमोन्स, एकोनाइटस व विभिन्न आर्किडस अपने-अपने जीवन चक्र को समयानुसार पूरा करते हैं। अन्त में जब लगभग सभी फूॅलों का जीवन चक्र पूरा हो चुका होता है तब पॅालीगोनम् व इमपेसियन्स घाटी की रमणीकता को अक्षुण्य बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं।

फूॅलों की घाटी प्रकृति द्वारा भारत को दिया गया एक वरदान है। जरूरत है इसके समुचित प्रबन्धन व रख-रखाव की। जड़ी बूॅटीयों के विदोहन को रोकने के लिए वन्य जीव अधिकारियों व कर्मचारियों में एक परस्पर सामंजस्य की भावना की नितान्त आवश्यकता है। जबकि सतह पर ऐसा हो नहीं रहा है। फूॅलों की घाटी राष्ट्रीय पार्क के प्रबन्धन के लिए पिछले तीन सप्ताह से डी० एफ० ओ० का पद रिक्त पड़ा हुआ है। वन्य जीव विभाग की नीव का मुख्य पत्थर गेम गार्ड होता है जिसकी ड्यूटी इन राष्ट्रीय पार्को व अन्य अभयारण्यों में भ्रमण करके वन्य जीव व वनस्पतियों के संरक्षण की होती है। लेकिन इनके लिए प्रोन्नति की गुंजाइश बहुत ही क्षीण हैं। जिससे इनकी कार्यशीलता पर सीधा असर पड़ता है। फूॅलों की घाटी में कुछ गेम गार्ड पिछले १५ सालों से कार्यरत हैं, तथा यह विभाग में पिछले २५ सालों से कार्य कर रहे हैं लेकिन इनकी आज तक कोई प्रोन्नति नहीं हुई है। सबसे दुखद बात यह है कि फूलों की घाटी में गेम गार्डो की नियुक्तियॅा एक दण्डनीय नियुक्ति मानी जाती हैं। प्रोन्नति के अवसरों की क्षीणता व दण्डनीय नियुक्तियों के कारण फूॅलों की घाटी का समुचित प्रबन्धन नहीं हो पा रहा है।

यह सार्वभौमिक सत्य है कि नींव का पत्थर जितना मजबूत होगा उतनी ही इमारत टिकाऊ होगी। अतएव यदि हम इन प्राकृति धरोहरों व संसाधनों के रख-रखाव के लिए चिन्तित है तो इन नीव के पत्थरों को मजबूती प्रदान करने की आवश्यकता है। पॅालीगोनम फूॅलों की घाटी में १९८२ से पहले भी था और आज भी है। फ्रैंक स्माइथ ने १९३८ में फूॅलों की घाटी में पॅालीगोनम के अस्तित्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है: कि पॅालीगोनम एक लम्बा, मजबूत, तने वाला पौधा है। जो कि भेड़ बकरियों के अत्यधिक प्रयोग वाले क्षेत्रों में अत्यधिक नाइट्रोजन युक्त पोषक पदार्थों के जमा होने के फलस्वरूप फैलता है। यह पौधा भू-स्खलन वाले कुछ क्षेत्रों में वृक्ष रेखा के आस-पास अधिक मात्रा में पाया जाता है। जहॅा इसका कार्य मृदा का क्षरण होने से रोकना है। पॅालीगोनम घाटी में केवल अपने वास स्थलों में ही उग रहा है। फूलों की घाटी में चरान पर प्रतिबन्ध के कारण पॅालीगोनम् की ऊचाई में अवश्य ही वृद्धि हुयी है। तथा इसके वृक्ष रेखा के समीपवर्ती भागो, जहॅा तक की पर्यटक अधिकतम संख्या में पहुॅच पाते हैं, में अधिक उगने के कारण आम पर्यटको को आभास होता है, कि पॅालीगोनम् घाटी की अन्य वनस्पतियों को समाप्त कर रहा है। जबकि ऐसा नहीं है।

इस वर्ष के अध्ययन के दौरान यह मेरा सुखद अनुभव रहा है कि कुछ संकटग्रस्त औषधीय पादप जैसे मेगाकारपिया पौलीएण्ड्रा (वड़ामूला), पिक्रोराइजा कुरूवा (कुटकी), साइप्रीपीडिएम हिमालयीकम्, फ्रीटीलेरीया रोयली, एकोनिटम वालफोराई, व जूनीपिरस कम्यूनिस की जनसंख्या में पिछले एक दशक से घाटी में वृद्धि हुई है। मेगाकर्पिया के १९९५ में केवल १२ से अधिक पौधे घाटी में नही थे, लेकिन २००१ में यह संख्या २७ हो गयी है। उपरोक्त सभी तथ्यों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि फूॅलों की घाटी को जरूरत है समुचित रखरखाव व आधारभूत संरक्षण की, न कि अपने स्वार्थ से जुड़े हुए विवादों की ।